पर देकर गांवों में महाजनी करते हैं; यदि हां, तो क्या सरकार इस बात को अनिवार्य कर देगी कि सारे देश में सभी पंचायतों में बेजमीनों, कम जमीन वालों और खेत मजदूरों की अलग सहकारी समितियां कायम की जायें और उनको कर्जा दिया जाये ? मैं बताना चाहता हूँ कि बिहार में गत वर्ष बेजमीनों और खेत मजदूरों को जो कर्जा दिया गया, उसकी वसूली का अनुपात जमीन वालों की तुलना में ज्यादा है ।

SHRI M. S. GURUPADASWAMY: The loan system we have introduced will take care of this aspect. Even tenants can have loans from the co-operative societies.

श्री शिवनारायण : जब हम बैंकों में डिपाजिट करते हैं, तो हमको चार, साढ़े चार परसेंट इन्ट्रेस्ट मिलता है, लेकिन हमको नौ पर सेंट देना पड़ता है। मंत्री महोदय क्लैरिफाई करें कि इतना डिफरेंस क्यों है।

श्री भोगेन्द्र झा : अध्यक्ष महोदय, मैं ने लैंडलेस पेजेन्ट्स के बारे में पूछा है ।

SHRI M. S. GURUPADASWAMY: We have schemes for co-operative farming to give lands to the landless people. We are not giving loans to the landless unless they are tenants...(*Interruptions*).

SHRI JAGJIWAN RAM: There is an arrangement for giving loan to persons who have no property to mortgage to the co-operative banks and in ordinary parlance are not credit-worthy. They can get some loans if two members of the co-operative stand surety for them.

गोरक्षा समिति

+

*1739. **श्री निहाल सिंह** :

श्री रामावतार शर्मा :

श्री रामगोपाल शालवाले :

क्या खाद्य तथा कृषि मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार द्वारा नियुक्त गोरक्षा समिति के एक सदस्य, जगतगुरु शंकराचार्य, ने हाल में अपने भाषण में सरकार पर आरोप लगाया है कि गोरक्षा के राष्ट्रीय प्रश्न पर हिन्दुओं की भावनाओं की अवहेलना करते हुए सरकार ने हटधर्मी का रवैया अपनाया हुआ है ;

(ख) क्या यह सच है कि उन्होंने पुनः गोरक्षा आन्दोलन आरम्भ करने की धमकी दी है ;

(ग) क्या यह भी सच है कि उक्त समिति के कार्य में कुछ गतिरोध पैदा हो गया है ; और

(घ) यदि हां, तो सरकार की इस पर क्या प्रतिक्रिया है ?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF FOOD, AGRICULTURE, COMMUNITY DEVELOPMENT AND CO-OPERATION (SHRI ANNASAHIB SHINDE): (a) and (b). Government have not received any communication from Jagatguru Shankaracharya making any observation to the effect that Government had adopted an obstinate attitude on the question of cow protection. A section of the Press reported Jagatguru Shankaracharya's speech purporting to start an agitation under certain circumstances.

(c) No, Sir.

(d) Does not arise.

श्री निहाल सिंह : क्या यह सच है कि प्रथम पंच-वर्षीय योजना से अब तक काऊ-स्लाटर की संख्या हिन्दुस्तान में बढ़ी है ; यदि हां, तो कितनी ?

SHRI ANNASAHIB SHINDE: The number of cows has increased ? I did not quite catch his question.

SHRI BAL RAJ MADHOK: Whether the number of cows butchered has increased.

SHRI ANNASAHIB SHINDE: I have no information on that point.

श्री निहाल सिंह : क्या यह सच है कि प्रथम पंच-वर्षीय योजना से अब तक गोमांस

खाने की परिपाटी अधिक बढ़ी है ; यदि हां, तो सरकार उसको रोकने के लिए क्या ठोस कदम उठा रही है ?

खाद्य तथा कृषि मन्त्री(श्री जगजीवन राम): ये आंकड़े माननीय सदस्य के पास होंगे, हमारे पास नहीं है ।

श्री रामगोपाल शालवाले : स्वराज्य मिलने से पूर्व गांधीजी और कांग्रेस के नेताओं ने गो-रक्षा को अपने घोषणापत्र का एक अंग बनाया था और स्वतंत्रता मिल जाने पर गोहत्या कानूनन बन्द करने का आश्वाशन दिया था । परन्तु आज तक इस राष्ट्रीय प्रश्न को टालने की नीति बरती जा रही है । सरकार ने जो कमेटी बनाई है, उसमें अधिकांश गवाहियां ऐसे लीगों की कराई जा रही हैं, जो सरकारी नीति का पोषण करते हैं और गोहत्या जारी रखने के पक्षपाती हैं । क्या यह सत्य हैं कि कमेटी के एक सदस्य, जगतगुरु शंकराचार्य, त्यागपत्र देकर आगामी दिसम्बर मास में पुनः गोहत्या-बन्दी आन्दोलन चलाने की तैयारी कर रहे हैं और गोहत्या का निरोध समिति ने हरिद्वार कुम्भ के अवसर पर एक लाख सत्याग्रही भर्ती करने की घोषणा कर दी है ?

श्री जगजीवन राम : इसकी कोई सूचना हमारे पास नहीं है ।

श्री शिव नारायण : मैं सरकार से यह जानना चाहता हूँ कि वह कब तक इस देश में कम्पलीट गोवध-बन्दी कानून लागू करेगी । क्या वह जांच करके ये आंकड़े इकट्ठा करेगी कि कितने बड़े-बड़े नेता लोग कितना गौ-पालन करते हैं ?

अध्यक्ष महोदय : श्री राम सेवक यादव ।

राम सेवक यादव : मैं मन्त्री महोदय से यह जानना चाहता हूं कि किन-किन राज्यों में गो-हत्या पर प्रतिबन्ध लगा है और किन-किन में नहीं है । जिन राज्यों में गैर-कांग्रेसी सरकारें बनीं थी, खास तौर से जिन राज्यों में जनसंघ सरकार का सबसे बड़ा घटक था, क्या उनमें इस दिशा में कोई कदम उठाया गया, कोई कानून बनाया गया ?

SHRI ANNASAHIB SHINDE : As far as the factual position is concerned, I have the States which have already imposed a total ban on cow slaughter : Bihar, Gujarat, Madhya Pradesh, Maharashtra in the Vidarbha region, Mysore, Orissa, Punjab, U. P., Rajasthan, Jammu and Kashmir and Haryana. The following States have imposed a partial ban on the slaughter of young and useful cows : Andhra Pradesh (in the Telengana region). Assam, Maharashtra (in the former Bombay State), Madras, and West Bengal. A total ban on the slaughter of cows also exists in the following Union Territories : Delhi, Chandigarh, Dadra and Nagar Haveli, Andaman and Nicobar Islands, while Goa, Kerala, West Bengal and Madras Governments have expressed dissenting views regarding cow slaughter.

SHRI B. N. KUREEL : Has the Cow Protection Committee submitted any interim report and, if so, what are the features of the report.

SHRI ANNASAHIB SHINDE : No interim report has been submitted.

श्री यशवन्त सिंह कुशवाह : शासन ने गऊ रक्षा के सिलसिले में जो समिति बनाई है, उसे अपनी रिपोर्ट कब तक देने का समय दिया गया है, उसकी अब तक कितनी बैठकें हुई हैं तथा उस समिति ने अपना काम किस सीमा तक कर लिया है ?

SHRI ANNASAHIB SHINDE : In the beginning, the time-limit prescribed was about six months. Since the Committee took some time, the time-limit has been extended now up to 28th June 1968. But, as far as the Government is concerned, we do not come in the way of the committee at all. They should finalise their report as early as possible, and we will welcome the finalisation of the report earlier.

श्री सैयद अली : मैं अन्न मंत्री जी से यह पूछना चाहता हूँ कि यह जो गऊ रक्षा समिति

बनी है, इसमें बीफ खाने वाली कोमें—जैसे मुसलमान, क्रिश्चियन, कुछ हरिजन इन के कितने मेम्बर लिये गये हैं, अगर कोई नहीं लिया गया है, तो क्यों नहीं लिया है और क्या अब इनमें से कुछ लोगों को आप इस कमेटी पर मुकर्रिर करना चाहते हैं ?

दूसरा सवाल.....

श्री बै० ना० कुरील : अध्यक्ष महोदय, मुझे इस पर एतराज है, हरिजन बीफ नहीं खाता हैं ।

श्री सैयद अली : जो कौमें चमड़े का व्यापार करती हैं, क्या इनमें से कुछ लोग इस समिति में लिये गये हैं या नहीं लिये गये हैं ? अगर नहीं लिए गये हैं, तो क्या आप अब लेना चाहते हैं ?

तीसरा सवाल—7 अप्रैल, 1968 के बम्बई के मराठी "लोक सत्ता" में श्री जैन ने लिखा है कि श्री शंकराचार्य जी ने ऐसा जाहिर किया है कि अगर कोई यह साबित कर दे कि वैदिक काल में गऊ भक्षण किया जाता था, तो मैं यह एजीटेशन बन्द कर दूंगा—क्या मिनिस्टर साहब की तवज्जह इस तरफ दिलाई गई है ?

श्री जगजीवन राम : हम ने इस कमेटी पर जिन सदस्यों को रखा है, किसी से यह जानकारी कर के नहीं रखा है कि कौन बीफ(मोमांस) खाने वाला है और कौन बीफ(मोमांस)खाने वाला नहीं है । कोई भी भद्र व्यक्ति हमारे साथ सहमत होगा कि किसी कमेटी में सदस्यों को रखने के लिए यह पूछा जाये कि आप बीफ(मोमांस)खाते हैं या नहीं, तब हम रखेंगे, बीसवीं सदी में यह चीज बिलकुल समझने लायक नहीं है । इस दृष्टिकोण से हमने सदस्यों को नहीं रखा है ।

वैदिक काल में गऊ मांस खाते थे या नहीं, इस तथ्य पर अभी भी अलग अलग ख्यालात हैं । कुछ लोगों का ख्याल है कि खाते थे, इस को बहुत अच्छा समझा जाता था...

श्री रामगोपाल शालवाले : बिलकुल गलत है ।

श्री जगजीवन राम : मैं जो कह रहा हूँ, उसको सुनिये, थोड़ा सन्तोष रखिये, आप से ज्यादा मैं भी जानता हूँ । गलत है या सही है—मैं अपनी राय नहीं दे रहा हूँ । मैं यह कह रहा हूँ कि इस पर अलग अलग रायें हैं, कुछ लोगों का ख्याल है कि खाया जाता था, बछड़े के मांस को डेलीकेसी समझा जाता था..... (**व्यवधान**)

श्री हरदयाल देवगुण : यह बिलकुल गलत है...(**व्यवधान**)...

श्री जगजीवन राम : वह खाते थे, खाते थे ।...(**व्यवधान**)

SHRI KANWAR LAL GUPTA : It is objectionable ; he must withdraw it ; he will have to withdraw it.

श्री रामगोपाल शालवाले : वह खाते थे—यह आप जैसे लोगों का ख्याल है ।

श्री हरदयाल देवगुण : यह गलत बात है, हम सुनना नहीं चाहते ।

श्री कंवर लाल गुप्त : वह खाते थे—आब्जैक्शनेबिल बात है, इनको इसे वापस लेना चाहिये ।

श्री शशि भूषण वाजपेयी : वेदों में लिखा है कि लोग खाते थे ।

श्री रामगोपाल शालवाले : अध्यक्ष महोदय, यह 40 करोड़ हिन्दुओं की माता के प्रति ठेस पहुँचाने का प्रयत्न किया गया है, हम इस चीज को सुनना नहीं चाहते ।...(**व्यवधान**)...आप इन शब्दों को वापस लीजिये ।

MR. SPEAKER: Order, order. I beg all of you to sit down including Mr. Shalwale. I only want to regulate the proceedings. I will call one by one, so that 10 Members

need not get up and shout. If all of you sit down. I will call one by one.

SHRI KANWAR LAL GUPTA : Sir, a point of order. (*Interruption*).

MR. SPEAKER : No point of order in the question-hour. I am on my legs. I appeal to all Members to sit down. Let them not shout.

श्री बलराज मधोक : अध्यक्ष महोदय, खेद का विषय है कि इस प्रश्न को एक साम्प्रदायिक रंग देने की कोशिश की जा रही है। जिस भाई ने यह सवाल पूछा - कि कौन बीफ खाता था या नहीं खाता था, यह सवाल पूछना गलत था। गाय का प्रश्न इस देश का आर्थिक प्रश्न है, गाय का प्रश्न इस देश की भावनाओं का प्रश्न है, इस देश की एकता का प्रश्न है। जहां तक वैदिक काल में क्या होता था और क्या नहीं होता था, मैं समझता हूं मंत्री महोदय ने भी यही कहा है कि उनको मालूम नहीं है। लेकिन कुछ लोग डेलीब्रेटली इस बात की चर्चा कर रहे हैं - मेरा यह चैलेन्ज है कि यह बात गलत है, आप चाहें तो कुछ वैदिक स्कालर्स मिलें और इस बात को तय करें। मेरा यह कहना है कि यह बात बिलकुल गलत है... (**व्यवधान**)...

श्री जगजीवन राम : मैं भी चैलेन्ज कर सकता हूं...(**व्यवधान**)...

श्री मधु लिमये : मेरा एक निवेदन है— जगजीवन राम और बलराज माधोक दोनों को भवभूति का उत्तर रामचरित पढ़ने के लिये कहा जाये, वहां सब कुछ मिल जायेगा।

श्री कंवर लाल गुप्त : यह गलत है, उनको ये शब्द वापस लेने चाहिएं, उन्होंने मिसलीड किया है, उन को ये शब्द अवश्य वापस लेने चाहिएं, उन्होंने गलत बयान देकर देश की भावनाओं के साथ गद्दारी की है।

अध्यक्ष महोदय : "नाथिंग" गलत है। He has a right to hold his view, as you have right to hold your view.

SHRI N. SREEKANTAN NAIR : We have a right to eat beef. What is this ?

श्री शशि भूषण वाजपेयी : यह इलैक्शन स्टंट है, यह यहां पर नहीं चलेगा। इन लोगों ने पेशा बना रखा हैं। ये हिन्दुओं के दुश्मन हैं।

श्री कंवर लाल गुप्त : अध्यक्ष महोदय, इस तरह से नहीं होगा। ये शब्द इनको वापस लेने चाहियें।

MR. SPEAKER : There is nothing to take back. I have given my ruling.

श्री कंवर लाल गुप्त : अध्यक्ष महोदय, इन्होंने गलत और झूठा बयान दिया है, इस देश की भावनाओं के साथ गद्दारी की है, इनको येशब्द वापस लेने चाहियें।

MR. SPEAKER : There is nothing to take back. You want the Minister to follow one line, and I must follow your line ? I am not prepared to hear you now. There is a divided opinion in the House. Please sit down. There is nothing to take back.

श्री कंवर लाल गुप्त : अध्यक्ष महोदय, यह लोगों की भावनाओं का सवाल है, इस तरह से लोगों की भावनाओं को ठुकराया नहीं जा सकता। आप लोगों की भावनाओं को कुचल नहीं सकते। मैं मांग करता हूं कि जगजीवन राम जी इस्तीफा दें और इस ईशू पर इलैक्शन लड़ें। आप बाहर चलिये...(**व्यवधान**)...

MR. SPEAKER : I appeal to all of you to sit down.

श्री कंवर लाल गुप्त : मन्त्री महोदय, इसको वापिस लें। इससे देश के करोड़ों आदमियों को ठेस पहुँची है।

MR. SPEAKER : I am not prepared to agree to that. Because you want somebody to withdraw something, I would not agree. You hold your opinion, but there is a section of the House which does not agree with that. (*Interruptions*). Let us

not lose our temper. Otherwise, I will have to adjourn the House. This is the last but one day. Because you do not agree, everybody should follow your line ? You cannot dictate to me.

SHRI BAL RAJ MADHOK : I appeal to the Minister to say that there are differences of opinion on this...

MR. SPEAKER : I wonld not allow the Minister to say anything because of this threat. They should first of all sit down. There must be some order. Only one day is left. The House also is divided on this. (*Interruptions*). Opinion is divided and I request hon. members not to get excited. If a question is asked, the minister will reply. Everybody will get a chance. Now, Mr. Gupta.

श्री कंवर लाल गुप्त : मन्त्री महोदय ने आखीर में जो बात कही कि वे वैदिककाल में गोमांस खाते थे...(**व्यवधान**)...मैंने तो यह कहा कि इस पर दो मत हैं और उसके बाद उन्होंने कहा कि मैं कहता हूं कि खाते थे। ...(**व्यवधान**)...

तो मैं मन्त्री महोदय से कहना चाहता हूं कि इस कमेटी के बारे में सारे देश में अब एक भावना बन गई हैं कि यह इम्पार्शल नही है और यह सरकार चाहती है कि गोहत्या जारी रहे।...(**व्यवधान**)...तो जो लोगों को विश्वास था वह एक तरह से खत्म हो गया है। तो मैं मन्त्री महोदय से पूछना चाहता हूं कि क्या सरकार देश के करोड़ों लोगों की भावनाओं को सामने रखते हुए—कमेटी को अलग छोड़ते हुए—देश में कानूनन गोहत्या को बन्द करेगी ?

दूसरी बात यह कि वैदिककाल में खाते थे, यह सरकार की राय तो नहीं है, इसका स्पष्टीकरण भी मंत्री महोदय करें।

SHRI JAGJIWAN RAM : I wish to reiterate what I have said. The question put to me was whether during Vedic period, beef was taken. I stick to the reply I gave, *viz.*, opinion on that point is divided. Some people hold that beef was regarded as a delicacy during the Vidic period. Some people hold that beef was not taken and it was taboo. I have not expressed any opinion. I reiterate that opinion on this point is divided. A very influential section of the Vedic research scholars hold that beef was taken during Vedic period and it was regarded as a delicacy. I stick to that. As I said, I have not expressed my opinion on that point. I do not claim to be a scholar of Vedic literature, as some other friends there perhaps claim to be. (*Interruptions*). Therefore, I have not categorically supported one view on the other.

SHRI N. SREEKANTAN NAIR : May I know whether the interests of those Hindus who want to eat beef, who consider that the lives of human beings are more valuable than cattle and who consider beef to be a cheap and nutritious food for the poor people will also be protected by this Government or not ? (*Interruptions*).

SHRI UMANATH : Now that you are allowing them to put questions, you must allow others also to put questions. Other-wise, it would not be fair.

MR. SPEAKER : Only one by one I can allow.

SHRI N. SREEKANTAN NAIR : I want an answer to my questions. (*Intetruptions*).

SHRI S. KANDAPPAN : May I know whether the Government is aware of the sentiment that is prevailing in other parts of the country, particularly in southern part of India, where also the people are predominantly Hindus like the people living in northern India, but they are not making a fetish of this issue and a majority of them, particularly in my part of the country the scheduled castes, are still depending to a large extent for nourishing diet on cow and other cattle ? I am afraid if this sort of attitude is taken, it will adversely affect those people. I want a serious answer from Government whether they are considering this vital aspect of the issue.

SHRI C. DASS : Why only scheduled castes ? Other upper classes also eat beef.

SHRI S. KANDAPPAN : I am only giving the facts. Let them not be motivated.

SHRI JAGJIWAN RAM : During the present period, it is not the monopoly of the scheduled castes only to take beef. There are many others in the upper castes also who take it. But I am not expressing any opinion of the Government. We have set up a very high-powered committee and I am sure, while making its recommendations, the committee will keep all these aspects in view.

SHRI S. KANDAPPAN : What about protecting the interests of those who want to eat beef ? (*Interruptions*).

SHRI E. K. NAYANAR : Sir, the Government of Kerala has not banned cow slaughter and hereafter also it is not going to do so because our State is not a religious State, it is a secular State. Previously the Government of India adopted the report of a committee appointed in 1957. If we take this issue on the view-point of religion, we cannot kill rates, snakes, monkeys and other animals.

MR. SPEAKER : The Minister will say "kill all rates".

SHRI E. K. NAYANAR : Erom the national point of view I will remind the Government about the Foodgrains Enquiry Committee Report of 1957. Shri Asoka Mehta was the Chairman of that Committee. On page 116 of that report, on the problem of cattle, this is what they have said :

> "The problem of cattle in India seems to have remained as baffling as it was before. The number of useless, stray and un-cared-for cattle is alarmingly on the increase. The total population of useless and un-productive cattle in India is estimated to be 16 millions. This large cattle population undoubtedly makes serious inroads into the agricultural output of the country. Besides, it also accelerates the problem of soil erosion. In fact, in many parts of the country there is already a serious competition between man and cattle for subsistence from land. We feel that the seriousness of this menace should be recognised by the Government and steps taken by them for effectively decreasing the number of such cattle."

I want to know whether Government will take this report seriously and consider this issue not from a religious point of view but from the national point of view ?

SHRI JAGJIWAN RAM : Hon. Members should know that a high-powered committee is there and all this material will be before that committee. That committee after taking into consideration all these factors will make their recommendation as to how decrepit and old cattle will have to be taken care of and all that. In case they are to be taken care of they will make necessary recommendation. After taking all these factors, the material and the literature available, into consideratson the committee will makes its recommendation.

SOME HON. MEMBERS *rose.*—

MR. SPEAKER : We have already spent 40 minutes on this question. There is already excitement in the House and one or two more supplementaries are not going to be helpful to the House. Let us go to the next question.

Election of Non-Scheduled Tribes Members from Scheduled Tribes Constituencies

*1740. SHRI KARTIK ORAON : Will the Minister of LAW be pleased to state :

(a) whether Government are aware that an Indian Christian from Bero Assembly Constituency reserved for Scheduled Tribes and an Anglo-Indian from Kerala from Madaribat Assembly constituency for Scheduled Tribes were elected to the Bihar and West Bengal Legislative Assemblies, respectively, in the General Elections of 1962 ;

(b) if so, whether Government propose to order a thorough investigation into these two cases of irregulaties and take action against the parties concerned and their party leaders, who knowing their identity gave them the tickets for contesting from the seats reserved for the members of Scheduled Tribes ; and